विद्यावारिधि पाठ्यक्रम परिणाम

- **इस कोर्स को पूरा करने के बाद /कोर्स के अन्त में छात्र-**

कोर्स	कोर्स परिणाम।
कोर्स-1 शोधप्रविधि	CO1- अनुसंधान का अर्थ एवं स्वरूप का ज्ञान प्राप्त होगा। CO2- अनुसंधान के वैविध्य का परिज्ञान होगा। CO3- अनुसंधान पद्धतियों का अनुपालन कर सकेगा। CO4- शोध संक्षिप्तका की रूपरेखा प्रस्तुत कर सकेगा। CO5- संस्कृत वांग्मय में संभावित अनुसंधान के नूतन क्षेत्रों का निर्धारण कर सकेगा। CO6-शोध के क्रमिक सोपानों का सृजन कर सकेगा। CO7-अनुसन्धेय विषयों के चयन में मार्गदर्शन प्राप्त कर सकेगा।
कोर्स-2 पांडुलिपि विज्ञान एवं पाठालोचन	CO1- पाण्डुलिपि एवं पाण्डुग्रन्थों का परिज्ञान होगा । CO2- मातृकाग्रन्थों के स्वरूप एवं आकृति का अन्तर स्पष्ट कर सकेगा। CO3- पाण्डुलिपि संग्रहण के इतिहास की विवेचना कर सकेगा। CO4- पाण्डुलिपि संरक्षण के उपाय ज्ञात कर उनका संरक्षण करने में समर्थ होगा । CO5- पाण्डुलिपियों के निर्माण की तार्किक क्षमता विकसित होगी तथा लिपि लेखन का अभ्यास हो सकेगा। CO6- ग्रन्थों के समीक्षात्मक संस्करण के निर्माण में सक्षम हो सकेगा । CO7-ग्रन्थ सम्पादन की पद्धतियों का परिज्ञान होगा तथा ग्रन्थ सम्पादन की क्षमता विकसित होगी । CO8- पाण्डुलिपि से सम्बद्ध पारिभाषिक पदों का परिज्ञान कर पाण्डुग्रन्थों के सम्पादन एवं प्रकाशन में उनका प्रयोग कर सकेगा।
कोर्स-3 वांग्मय सर्वेक्षण, शोध सर्वेक्षण और अनुसन्धान- प्रकाशन नैतिकता	CO1- संस्कृत साहित्य/वाङ्मय के ऐतिहासिक ग्रन्थों का परिज्ञान प्राप्त कर सकेगा। CO2- ग्रन्थकारों का परिचय, उनका योगदान तथा उनके काल का निर्धारण करने की दृष्टि प्राप्त हो सकेगी। CO3- तत् तत् शास्त्रों के सिद्धान्तों की तर्कसंगत व्याख्या एवं निष्कर्ष निर्धारित कर सकेगा। CO4- तत् तत् शास्त्रों में कृत शोध कार्यों की समीक्षा कर सकेगा। CO5-साहित्यिक चोरी की सूक्ष्मता से परिज्ञान कर पायेगा। CO6-- अनुसन्धान में नैतिकता का प्रयोग कर सकेगा। CO7- प्रकाशन में नैतिकता को स्थापित करने के लिए दूसरों को प्रेरित कर सकेगा। CO8- साहित्य सृजन में साहित्यिक चोरी को रोकने में प्रभावी भूमिका का निर्वाह कर सकेगा ।
कोर्स-4 Introduction to Computers	CO1-आधुनिक परिप्रेक्ष्य में कंप्यूटर के महत्व को समझेगा और उसकी सराहना करेगा। CO2-अनुसंधान, अध्ययन और संबंधित कार्यों के लिए आधारभूत कंप्यूटिंग उपकरणों को संचालित करेगा। CO3-विभिन्न इंटरनेट वेब संसाधनों को पहचानेगा और उनका उपयोग करेगा। CO4-उपयुक्त जानकारी का उपयोग करके सामान्य अनुसंधान/शिक्षाविदों से संबंधित समस्याओं का समाधान करेगा। CO5-अपेक्षित प्रारूपानुसार लेख, शोध पत्र और थीसिस आदि का निर्माण करेगा। CO6-इंटरैक्टिव पावरपॉइंट प्रेजेंटेशन बनाएं और प्रभावपूर्ण रूप से उनका प्रस्तुतीकरण करेगा। CO7-साहित्यिक चोरी के साधनों को पहचानेगा और उनका उपयोग करेगा। CO8- संदर्भों में समस्या-समाधान और आलोचनात्मक चिन्तन कौशल को लागू करेगा। CO9-पारंपरिक ज्ञान का समर्थन और उसका विकास/प्रसार करने के लिए आधुनिक तकनीक के उपयोग को जानेगा।

Course Oucomes (COs) of Ph.d Course Work

- After Completing this course /at the end of this course the student will be able to-

Course	Course Outcomes
Course-1 Shodh Pravidhi	CO1-know the meaning and nature of research. CO2-understand the diversity of research. CO3-follow research methodologies. CO4-present research synopsis. CO5-determine new areas of probable research areas in Sanskrit language. CO6-create respective stages of research. CO7-get guidance in the selection of research subjects.
Course-2 Pandulipi Vigyan Evam Pathalochan	CO1-understand manuscripts. CO2- explain the difference between the nature and shape of the manuscripts. CO3-discuss the history of manuscript collection. CO4-know the protection measures of manuscript, after that will be able to protect them. CO5- develop logical ability to create manuscripts and practice scripts writing. CO6- produce critical editions of texts. CO7- know the methods of text editing and the ability to edit the book will be developed. CO8- understand manuscript terms, will be able to use them in editing and publishing manuscripts
Course-3 Vangmaya Sarvekshan evam Shodh Sravekshan	CO1- know about historical texts of Sanskrit literature/Vangmaya. CO2 - receive an introduction of authors, their contribution and the vision of determining their period will be available. CO3- able to determine the rational explanation and conclusion of the principles of the shastras. CO4- be able to review the research work done in the shastras. CO5-insight the plagiarism. CO6- use ethics in research. CO7-inspire others to establish ethics in publication. CO8- play an effective role in preventing plagiarism in literature creation.
Course-4 Introduction to Computer	CO1-understand and appreciate the importance of computers in modern world. CO2-operate basic computing devices comfortably for research, studies and related tasks. CO3- identify and utilize various Internet web resources. CO4- solve common research/academics related problems using appropriate Information CO5-create articles, research papers, and theses etc. as per required formats. CO6- create interactive PowerPoint presentations and effectively deliver them. CO7-identify and make use of Plagiarism tools. CO8- apply problem-solving and critical-thinking skills in collaborative contexts. CO9-learn the use of modern technology to support and grow/spread traditional knowledge.

विद्यावारिधि कार्यक्रम विशिष्ट परिणाम

- विद्यावारिधि षाण्मासिक कार्यक्रम के अन्त में, छात्र -

1. व्यापक स्तर पर शोधप्रविधियों का परिज्ञान होगा।
2. ज्ञान, बौद्धिक क्षमता और तकनीक के उपयोग से गुणवत्तावर्धन होगा।
3. अनुसंधान के लिए उपयोग होने वाली विधियों और तकनीकों द्वारा प्रकाशन योग्य मूल शोध के माध्यम से नए ज्ञान की खोज, व्याख्या और संचार कर सकेगें।
4. व्यक्तिगत प्रभावशीलता, आजीविका और स्व-प्रबंधन कौशल के लिए स्वामित्व।
5. शोध की उन्नत और विशिष्ट कौशल की एक महत्वपूर्ण श्रेणी में स्वायत्तता से कार्य करने में सक्षम होगें।
6. अनुसंधान की योजना और कार्यान्वयन का परिज्ञान होगा।
7. अनुसंधान और विकास के आधार पर एक सक्रिय, आत्म-आलोचनात्मक और आत्म-चिंतनशील दृष्टिकोण का अभ्यास।
8. शोध समस्याओं और मुद्दों को हल करने में नेतृत्व और मौलिकता का परिचय।
9. प्रभावशील अनुसंधान प्रबंधन के लिए आवश्यक मानकों, आवश्यकताओं एवं तत्सम्बन्धी आचरण का ज्ञान।
10. समसामयिक मुद्दों का गंभीर और रचनात्मक मूल्यांकन।
11. जटिल नैतिक और व्यावसायिक मुद्दों का प्रबंधन करना।
12. सामग्री संकलन का ज्ञान।
13. ज्ञान और बौद्धिक क्षमता का विकास।
14. शोध पत्र निर्माण कौशल।
15. शोधपत्र प्रस्तुती कौशल।
16. लेखन कला का विकास।
17. संचार कौशलों का विकास।
18. व्यावसायिक विकास।

Viyavaridhi Program Specific Outcomes

- At the end of this six month's course work, students will able to-

1. Comprehensive understanding of research methodologies.
2. Quality enhancement of knowledge, intellectual capacity and technology.
3. To discover, interpret and communicate new knowledge through original research publishable by methods and techniques applicable to the research.
4. Ownership for personal effectiveness, liveliness and self-management skills.
5. To be able to work autonomously in a significant range of advanced and specialized research skills.
6. Understanding of planning and implementation of research.
7. Practicing a proactive, self-critical and self-reflective approach based on research and development.
8. Introduce leadership and originality in solving research problems and issues.
9. Knowledge of the standards, requirements and practices required for effective research management.
10. Critical and constructive evaluation of contemporary issues.
11. Manage complex ethical and issues.
12. Knowledge of research material collection.
13. Development of knowledge and intellectual ability.
14. Research paper creation skills.
15. Research paper presentation skills.
16. Development of the art of writing.
17. Development of communication skills.
18. Professional Development.

विद्यावारिधि कार्यक्रम परिणाम।

- विद्यावारिधि के अन्त में, छात्र-

PO1: समीक्षात्मक गहन अध्ययन- निर्धारित ग्रंथों को गंभीर रूप से पढ़ने की क्षमता और इसके व्यापक निहितार्थों को समझने की क्षमता। इसमें अंतर्निहित है:

- विभिन्न रूपों, शैलियों, संरचनाओं का गंभीर अध्ययन।
- विभिन्न व्याख्यात्मक तकनीकों का प्रयोग।

PO2: आलोचनात्मक चिन्तन - विभिन्न मुद्दों और विषयों पर गंभीर रूप से चिन्तन और वास्तविक जीवन की स्थितियों से संबंधित करने की क्षमता। इसमें अंतर्निहित क्षमतायें हैं-

- ज्ञान का संश्लेषण और एकीकरण।
- तर्क कौशल का अभ्यास और विकास ।
- विषय वस्तु का गहन अध्ययन।

PO3: ज्ञान का एकीकरण- यह एक या एक से अधिक विषयों में विस्तृत ज्ञान और अनुशासनात्मक सीमाओं के ज्ञान को एकीकृत करने की क्षमता प्रदर्शित करता है। इसमें अंतर्निहित क्षमतायें हैं-

- ज्ञान की वर्तमान स्थिति का अध्ययन करें।
- बहु-विषयक सीखने की क्षमता।
- अन्य विषयों के कार्यों से परिचित होना।

PO4: सम्प्रेषण कौशल - यह विभिन्न स्वरूपों में जानकारी को सटीक रूप से निकालने और संप्रेषित करने की क्षमता प्रदर्शित करता है। इसमें विषय की सामग्री, संदर्भ और प्रकृति के लिए लेखन शैली को उचित रूप से समायोजित करने की क्षमता शामिल हैं।

- लिखित और मौखिक उभय विध संवाद।
- स्पष्ट रूप से और प्रभावी ढंग से लिखना, लेखन को अनुकूलित करना
- सभी स्थितियों के लिए विश्लेषणात्मक कौशल।

PO5: अनुसंधान अभिक्षमता - किसी भी विषय के लिए आलोचनात्मक और विद्वतापूर्ण अन्वेषण की भावना का विकास। इसमें शामिल है-

- उपयुक्त अनुसंधान स्रोतों की पहचान और मूल्यांकन करना।
- प्रलेखित अकादमिक लेखन में स्रोतों को शामिल करना।
- उन स्रोतों के प्रत्युत्तर में मूल तर्क तैयार करना।
- विशिष्ट समस्याओं के लिए उपयुक्त शोध पद्धतियों को लागू करना।
- अनुसंधान पद्धति का विशेष अध्ययन।
- शोध थीसिस तैयार करने के लिए कौशल प्राप्त करना।

PO6: एक वैश्विक नागरिक के रूप में भूमिका- वैश्विक प्रणालियों का आलोचनात्मक बोध और सम्बन्धित परिवर्तन को प्रभावित करने के लिए समुदायों में अपनी भूमिका का निर्वहण। इसमें अंतर्निहित क्षमतायें हैं:

- स्थान आदि की परवाह किये बिना दूसरों की भावनाओं और विचारों का सम्मान।
- विश्व के लोगों, समाजों और पपर्यावरण के बीच परस्पर जुडाव का प्रदर्शन ।

PO7: साहित्य समीक्षा - निर्धारित ग्रंथों का गंभीर अध्ययन एवं शोध की दृष्टि से उनमें समीक्षात्मक तथ्यों का अन्वेषण। इसमें शामिल है

- अनुसंधान के क्षेत्र में सम्पूर्ण संस्कृत वांग्मय की समीक्षा।
- प्राचीन और आधुनिक साहित्य का तुलनात्मक एवं समीक्षात्मक अध्ययन।
- शोध संबंधित क्षेत्र के विभिन्न साहित्य का परिज्ञान।
- शास्त्रों के विभिन्न सिद्धांतों का तुलनात्मक विमर्श।
- शास्त्रों का अंत:शास्त्रीय अनुशीलन।
- संस्कृत एवं आधुनिक विषयों की परस्पर पूरकता।

PO8:पाण्डुलिपि परिज्ञान - पाण्डुलिपि से सम्बन्धित ज्ञान की अभिवृद्धि एवं इससे सम्बन्धित तथ्यों का परिचय। इसमें अंतर्निहित क्षमतायें हैं:

- पाण्डुलिपियों के मूलभूत तत्वों का परिचय।
- देश के स्थित पाण्डुग्रन्थागारों एवं पाण्डुलिपि संग्रहालयों का विशिष्ट परिचय।
- पाण्डुलिपियों के महत्व एवं उपयोगिता का अवबोध
- पाण्डुलिपियों के संरक्षण और संग्रह का ज्ञान।
- पाण्डुग्रन्थों का सम्पादन।
-

PO10: अनुसंधान एवं प्रकाशन नैतिकता- शोध कार्य में नैतिकता की स्थापना।इसमें अंतर्निहित है-

- साहित्यिक चोरी का परिचय।
- शोध कार्य में साहित्यिक चोरी का दुष्प्रभाव।
- शोध कार्य में मौलिकता एवं नैतिकता की स्थापना।
- प्रकाशन नैतिकता एवं प्रकाशन कदाचार।

Programme Outcomes (POs) for Ph.d

- At the end of Ph.d students will able to-

PO1: Critical Close Reading- ability to read critically the prescribed texts and understand its broader implications. This includes:

- read closely in a variety of forms, styles, structures, and modes.
- use various interpretative techniques.

- **PO2: Critical Thinking** -An ability to think critically on various issues and subject matters and relate the same with real life situations. This includes the ability to:
- synthesize and integrate knowledge.
- practice and develop argumentative skills.
- in-depth study of the subject matter.

PO3: Integration of Knowledge-Demonstrate detailed knowledge in one or more disciplines and the ability to integrate knowledge across disciplinary boundaries. This includes the ability to:

- study the current state of knowledge.
- multi-disciplinary learning ability.
- show familiarity with works from other disciplines.

PO4: Communication Skill - Demonstrate the ability to extract and convey information accurately in a variety of formats. This includes: An ability to adjust writing style appropriately to the content, the context, and nature of the subject.

- communicate both in writing & orally.
- read & write analytically.
- analytical skills to all situations.

PO5: Research Aptitude - Development of a spirit of critical and scholarly enquiry for the subject. This includes:

- identify and evaluate appropriate research sources.
- incorporate sources into documented academic writing.
- formulate original arguments in response to those sources.
- apply appropriate research methodologies to specific problems.
- special study of Research Methodology
- attaining skills to prepare Research thesis.

PO6: Role as a Global Citizen- A critical understanding about the ways of the world and realization of one's role within communities to effect change. This includes the ability to:

- espect other feelings & thoughts irrespection of place.
- demonstrate interconnectedness among people, societies & enviornment arond the globe.

PO7:Literature Review-Critical study of prescribed texts and investigation of critical facts in them from the point of research. This includes

- review of Sanskrit Vangmaya in the field of research.
- comparative and critical study of ancient and modern literature.
- knowledge of various literatures of related to research.
- comparative discussion of different principles of the scriptures.
- inter-classical study of the scriptures.
- mutual complementarity of sanskrit and modern subjects.

PO8:Manuscript Intelligence- Enhancement of knowledge related to manuscript and introduction of facts related to it. This includes the ability to:

- introduction to the fundamentals of manuscripts.
- introduction to the manuscripts and manuscript museums located in the country.
- understanding the importance and usefulness of manuscripts
- knowledge of conservation and collection of manuscripts.
- editing of manuscripts.

PO10:Research and Publication Ethics - Establishment of ethics in research work. It includes-

- introduction to Plagiarism.
- side-effects of plagiarism in research work.
- establishing originality and ethics in research work.
- publication ethics and publication misconduct.